भारत–जापान संबंधों में चीन एक कारक के रूप में

डॉ. अजीत*

वर्तमान में भारत और जापान के मध्य घनिष्ठ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध देखने को मिल रहे हैं। दोनों एक–दूसरे को तवज्जो दे रहे है। दोनो देशों ने सुरक्षा, द्विपक्षीय व्यापार, उच्च प्रौद्योगिकी तथा असैन्य परमाणु क्षेत्र में व्यापक सहयोग किया है। जबकि चीन और जापान के मध्य आर्थिक सम्बन्धों के बावजूद ऐतिहासिक शत्रुता ओर राजनैतिक मतभेद हैं। इसी कारण भारत और जापान के बढ़ते हुए सहयोग को चीन अपने विरूद्ध मानता है तथा वो चिन्तित है कि दोनों देश चीन को प्रतिसन्तुलित करने के लिए एक रणनीति के तहत सामरिक सहयोग बढ़ा रहे हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में न केवल भारत जापान सम्बन्धों एवं चीन–जापान सम्बन्धों का विश्लेषण किया गया है अपितु रणनीतिक नजरिये से जापान–भारत के करीबी सम्बन्धों में चीन एक महत्वपूर्ण कारक है इसकी भी व्याख्या की गई है। भारत, चीन को आर्थिक और सामरिक दृष्टि से सन्तुलित करने के लिए जापान से सम्बन्ध बढ़ा रहा है। लेकिन यह बात चीन को खटकती है। लेकिन दूसरी तरफ चीन चाहे भारत पर आरोप लगा रहा है लेकिन वह खुद भी जापान के साथ दोस्ती बढ़ा रहा है। चीन, जापान के साथ आर्थिक वाणिज्यिक कारोबार बढा रहा है। वह जापान से तकनीकी मदद लेने में नहीं हिचकता है तथा भारत के हजार विरोध के बावजूद चीन पाकिस्तान को परमाणु व दूसरे मसलों पर मदद कर रहा है। दूसरी और पिछले एक साल में जापानी मुद्रा का अवमूल्यन हो रहा है। येन के लगातार गिरने से भारत को फायदा हुआ है। जापानी वस्तु जो बहुत महंगी हुआ करती थी वह भारत के लिए काफी सस्ती पड़ रही है। इसलिए भारत को चीन की नाराजगी को राजनीतिक मानते हुये परेशान होने का जरूरत नहीं है । इसे भारत ओर जापान के बीच राजनीतिक तालमेल बिठाने की कार्यवाही माना जाना चाहिए।

भारत और जापान के बीच ऐतिहासिक निकटता की अनुभूति रही है। छठी सदी में बौद्ध धर्म के उदय तथा जापान में इसके प्रचार–प्रसार के समय से ही दोनों देशों के बीच संबंध रहे हैं।[1] भारत के स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान भी जापानी शाही सेना ने सुभाष चन्द्र बोस की आजाद हिन्द फौज को सहायता प्रदान की। द्वितीय विश्व युद्धोपरान्त भारतीय प्रधानमंत्री नेहरू ने टोक्यो के यूनो चिड़ियाघर को दो भारतीय हाथी सद्भावना भेंट के रूप में भेजे थे। दोनो देशों के बीच अप्रैल 1952 में राजनायिक संबंधों की स्थापना हुई है।[2] वर्ष 1958 से जापान ने भारत को ऋण देना शुरू किया। वर्ष 1986 से वर्तमान तक जापान भारत को सहायता देने वाला सबसे बड़ा देश है।[3] इन्हीं ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक संबंधों की नींव पर दोनो देश मिलकर आधुनिक विश्व में अपनी जगह बनाना चाहते हैं। जापानी प्रधानमंत्री शिंजो अबे के 'आर्क ऑफ फ्रीडम' सिद्धान्त के अनुसार यह जापान के हित में है कि वह भारत के साथ मधुर संबंध रखे विशेषकर उसके चीन के साथ तनावपूर्ण रिश्तों के परिपेक्ष्य में।[4] भारत की ओर से भी चीन के साथ रिश्तों ओर वैश्विक परिप्रेक्ष्य में जापान को काफी महत्व दिया गया है।

वैश्वीकरण के आरंभ के साथ भारत ने अपनी अर्थव्यवस्था को उदार बनाया है व 'पूर्व की ओर देखो नीति' अपनाई जिसके परिणामस्वरूप अर्थव्यवस्था ने एक अलग पहचान बनाई है जो आज विश्व की चौथी बड़ी अर्थव्यवस्था है, इसका एक खरब डालर का अन्तर्राष्ट्रीय बाजार है एवं उभरती हुई वैश्विक अर्थव्यवस्था है जिसकी अवेलहना जापान द्वारा नहीं की जा सकती। इसी कारण दोनों देशों के बीच आर्थिक संबंध सर्वाधिक महत्वपूर्ण हो चले हैं। वर्ष 2006 में द्विपक्षीय व्यापार 6.5 बिलियन अमेरिका डॉलर था जो 2016–17 में 13.48 बिलियन डॉलर तक पहुंच चुका है। जिसमें भारत का जापान को निर्यात 3.65 बिलियन डॉलर है तथा जापान का भारत को निर्यात 9.63 बिलियन डॉलर का है। जापान से भारत को आने वाला प्रत्यक्ष विदेशी निवेश भी 2016–17 मे 4709 मिलियन डॉलर हो गया है। जापान से भारत को जो सरकारी विकास सहायता मिलती है जो 2002–03 में 120 बिलियन येन थी अब बढ़कर 2015–16 में 400 बिलियन येन तक पहुंच गयी है।[5] दोनो देशों के बीच मुक्त व्यापार समझौता भी सन् 2011 में हो चुका है जिसका क्रियान्वयन भी अप्रेल 2011 में शुरू हो चुका है। इसके साथ सीईपीए में वस्तुओं सेवाओं एवं निवेश को शामिल किया गया है। इस प्रकार सीईसीए, सीईपीए एवं एफटीए जैसे समझौतें करके भारत और जापान अपने द्विपक्षीय आर्थिक संबंधों को मजबूत बना रहे हैं।[6] ऐसे समझौतों के द्वारा व्यापार के नये अवसर पैदा हुए हैं, दोनों देशों की निजी क्षेत्र की कंपनियों के बीच घनिष्ठ संबंध विकसित हुए हैं तथा मूलभूत संरचना विकसित करने से जुड़े उद्योगों के लिए नये अवसर भी पनपे हैं। इन द्विपक्षीय संभावनाओं के अतिरिक्त चीन के आर्थिक दबाव को रोकने के लिए भी जापान के लिए भारत मददगार साबित हो सकता है। दोनों देशों द्वारा दुर्लभ धातुओं एवं मृदा के क्षेत्र में सहयोग ऐसे ही क्षेत्र की ओर इशारा करता है जहॉ चीन ने इन चीजों को जापान को निर्यात रोककर आर्थिक युद्ध की शुरूआत कर दी गई है। यही कारण है कि भारत–जापान की बातचीत में चीन एक महत्वपूर्ण विषय होता है।

जापान भी भारत के लिए बहुत अधिक महत्व रखता है। वह समृद्ध अर्थव्यवस्था है, जी–8 का सदस्य है तथा एन.एस.जी. का भी सदस्य राष्ट्र है। वह

व्याख्याता राजनीतिक विज्ञान राजकीय महिला महाविद्यालय, नीमकाथाना (सीकर)

अपनी विदेश नीति का भी पुनर्निरूपण कर रहा है और ऐसे मे वह भारत के साथ अपने हित, मूल्य व रणनीति का साम्य देख रहा है ताकि वह एशिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकें ओर इस विकसित भारत जो पूर्वोन्मुखी नीति पर चल रहा है और एशिया और एशियाई संस्थाओं के साथ जुड़ने का प्रयास कर रहा है के साथ सहयोग स्थापित कर सकें। जापान विश्व की तीसरी सबसे बड़ी महाशक्ति है जिसके साथ सवंद्धित व्यापार व निवेश संबंध भारत के लिए उसकी आर्थिक रणनीति के रूप में खास महत्व रखता है। भारत शेष एशिया के साथ जुड़ने का प्रयास कर रहा है और पूर्व की ओर देख रहा है, को एशिया में एक ऐसे साझेदार की आवश्यकता है जो इसके उद्देश्यों को पूरा करने मे सहयोग कर सके। जापान ने यह भूमिका स्वीकार करने मे अधिक दिलचस्पी दिखाई है जैसा कि विदित है कि भारत और चीन के बीच प्रतिस्पर्द्धा का परिवेश है यदि जापान का सहयोग न होता तो भारत को पूर्वी एशियाई शिखर सम्मेलन में भाग लेने का अवसर नहीं मिलता।[7] भारत को यदि एशिया प्रशांत क्षेत्र मे प्रमुख आर्थिक भूमिका निभानी है तो उसे जापान जैसे देश का सहयोग आवश्यक होगा। भारत को अपने अवसरंचना विकास हेतु 300 अरब अमेरिकी डॉलर निवेश की आवश्यकता है और जापान ने चीन के बाहर अपने व्यापार को विस्तृत करने में दिलचस्पी दिखाई है। अतः जापान, भारत के अवसरचंनात्मक ढ़ांचे मे निवेश करना चाहेगा और उसने ऐसा किया भी है। वह भारत को यूरोप व एशिया में उत्पादन व निर्यात का केन्द्र बनाना चाहता है। इस संबध में भारत के पूर्व विदेश सचिव शिवशंकर मेनन का यह कथन निश्चित तौर पर सही है कि "भारत और जापान के सबंध आार्थिक तथा सुरक्षा के दो पैरों पर खड़े हैं।" जापान ने भारत को दिल्ली–मुंबई इण्डस्ट्रीयल कोरीडोर परियोजना हेतु 4.5 अरब अमेरिकी डॉलर की सहायता दी है साथ ही वह चेन्नई–बेगंलूर औद्योगिक कोरीडोर तथा मुंबई–अहमदाबाद हाईस्पीड रेल परियोजना मे भी मदद कर रहा है।[8] उसने भारत को सैन्य साजो सामान भी प्रदान किये हैं। मेट्रो परियोजनाओ के लिए 5479 करोड़ रूपये भी दिये हैं। जापान, भारत के साथ मालाबार युद्धाभ्यास में भाग लेता रहा है। उसने भारत के साथ असैन्य परमाणु समझौता भी दिया है।

इस प्रकार दोनों देशों के अनेक क्षेत्रों मे एक समान हित हैं जैसे एशिया प्रशांत समुद्री मार्ग तथा हिंद महासागर की सुरक्षा बनाये रखना, अन्तर्राष्ट्रीय अपराध पर नियंत्रण, समुद्री डकैती तथा व्यापक जनसंहार के शस्त्रों का अप्रसार आदि।[9] जापान अपना 100 प्रतिशत तेल इसी रास्ते से आयात करता है और भारतीय नौसेना एक मजबूत शक्ति के रूप में यहाँ है जो जापान के तेलीय जहाजों की सुरक्षा में अपनी भूमिका निर्णायक रूप से निभा सकती है। भारत का हिन्द महासागरीय क्षेत्रीय सहयोग सगंठन का सदस्य होना तथा इन देशों पर उसका काफी प्रभाव रखना जापान के लिए बेहद अहम् है क्योकि वह इस सगंठन मे

पर्यवेक्षक का दर्जा चाहता है। चीन से सुरक्षा का एक महत्वपूर्ण पहलू है। चीन मे सैन्य क्षमताओं का विकास दोनों को विभिन्न प्रकार से प्रभावित करता है परन्तु सामरिक सोच में समानता के कारण दोनो ही चीन को शत्रु मानते हैं। पाकिस्तान को चीन द्वारा हथियार देना भी दोनो को अखरता है।

एशिया महाद्वीप भी भू–राजनीतिक स्थितियां बदल रही है जापान से परमाणु मसले पर नैतिक समर्थन प्राप्त करना यदि भारत की जरूरत है तो भार के साथ बेहतर रिश्ते बनाये रखना जापान की भी जरूरत है। नब्बे के दशक में सोवियत संघ के विघटन के बाद जिस तरह से एशिया में चीन का उभार हुआ है उससे अमेरिका ही नहीं जापान भी घबराया हुआ है चीन का विस्तारवादी रूझान कब ताइवान को पारकर जापान की सरहद तक जा पहुचे कहना मुश्किल है। इसलिए चीन के उभार को सतुंलित करने के लिए भारत, अमेरिका, जापान और आस्ट्रेलिया का नया गठजोड़ तैयार करने की मुहिम चलाई गई है। इसके आगे जापान, आर्क आफ डेमोक्रेसी की अवधारणा पर काम कर रहा है जिसके अन्तर्गत वह दक्षिण कोरिया फिलीपीन्स, ताइवान, सिंगापुर भारत व आस्ट्रेलिया जैसे लोकतांत्रिक देशों का एक सशक्त समूह खड़ा करके चीन को प्रति संतुलित करना चाहता है।[10] हालाकि इसी के समानान्तर दूसरी मुहिम यह भी रही है कि भारत रूस, चीन का नया ध्रुवीकरण बनाया जाये। चूकिः चीन के साथ भी चीन के अतीत मे अच्छे रिश्ते नही रहे इसलिए इसे व्यवहार मे लाना उतना आसान नही है जबकि भारत, अमेरिका और जापान के हितो में सीधा टकराव दिखाई नहीं पडता। जापान इस सत्य से भली–भाँति परिचित है कि नये विश्व में भारत की क्या हैसियत है हमारी बढ़ती ताकत के मद्देनजर ही अमेरिका ने परमाणु समझौता किया है इसलिए भारत के साथ दोस्ती जापान की विवशता भी है।

बीते कुछ सालों मे यह देखा गया है कि भारत–जापान के करीब जा रहा है और कुछ हलकों मे इसे चीन को काउटंर करने की कोशिश के तौर पर देखा जाता है। लेकिन चीन इससे शंकाग्रस्त है। वह सोचता हैं कि बीजिंग की सुधरती समुद्री रणनीतियाँ और चीन–भारत रणनीतिक रिश्तों में विकास से निसंदेह जापान के रणनीतिक संसाधनों, माध्यमो और बाजारों पर दूरगामी असर पड़ेगा इसलिए चीन और भारत को बाटना जापान के लिए अहम मुद्दा बन गया है। भारत और जापान तथा अमेरिका का साझा नौसेनिक युद्धाभ्यास मालाबार नाम से होता रहा है उस पर भी चीन ने भरत के सामने विरोध दर्ज करवाया है।[11] चीन को लगता है कि भारत का जापान और अमेरिका से यह गठजोड़ उसके खिलाफ है इसलिए उसके बाद से भारत ने जापान को इस युद्धाभ्यास मे आमंत्रित करना बंद कर दिया था। हालाकि अमेरिका के साथ युद्धाभ्यास हर दो साल मे होता था लेकिन एक बार फिर भारत ने जापान को मालाबार अभ्यास का हिस्सा बनाया है। हालांकि भारत इस अभ्यास को किसी राष्ट्र के विरूद्व कार्यवाही नहीं मानता तथा न ही वह इसमे कोई कूटनीति मानता है।

चीन, भारत की सैन्य शक्ति से नहीं बल्कि जापान और अमेरिका जैसे देशो के साथ मिलकर रणनीतिक धेराबन्दी को लेकर ज्यादा चितिंत है। चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग भारतीय पी.एम.मोदी को ऐसे नेता के रूप मे देखते है, जो हर हाल मे भारतीय हितों के लिए खड़ा रहना चाहते है। साथ ही क्षेत्र मे चीन को रोकने के इच्छुक देशों के साथ मिलकर काम करना चाहते हैं।

जापान के प्रधानमंत्री शिंजो अबे की भारत यात्रा के दौरान दोनो देशों के बीच दक्षिण चीन सागर पर समझौता हुआ। चीन इससे चिंतित है और वो भारत से नाराज भी है। चीनी विदेश मन्त्रालय ने इसे भारत का हस्तक्षेप करार दिया है क्योंकि चीन के अनुसार भारत का दक्षिण चीन सागर से कोई ताल्लुक नहीं है। यही नहीं चीन का कहना है कि जापान का भी इस इलाके से कोई ताल्लुक नहीं है क्योकि जापान पूर्वी चीन सागर में पड़ता है न कि दक्षिण चीन सागर में। अमरीका का भी कोई लेना देना नहीं है। हकीकत ये है कि जापान और अमेरीका बेहद तेज गति से उस इलाके के सभी देशों (जो चीन के विरोध में है) के साथ संबध बढ़ाने मे लगे हुए हैं और अब भारत भी उनके साथ दोस्ती बढ़ा रहा है। जाहिर है कि इसकी वजह से चीन भारत से नाराज है लेकिन भारत का नजरिया ये है कि भले समुद्र यहाँ से बहुत दूर है लेकिन वो अहम् शिपिंग चैनल है। वहॉ भारत के जहाज भी जाते है। भारत वियतनाम, कंबोडिया, मलेशिया जैसे देशों को निर्यात करता है जो इन्ही समुद्री इलाको से होकर जाता है। तो ऐसे मे भारत के जहाजों को भी रूकावट का सामना करना पड़ सकता है। चीन के दक्षिण चीन सागर मे मिलिट्री बेस बनाने से भार को भी दिक्कत हो सकती है।[12]

इस प्रकार चीन, भारत और जापान के सबंधों में आई गमजोशी से सशंकित है। लेकिन भारत और जापान के बीच चीन के उदय को लेकर नजरिये में प्रत्यक्ष अंतराल है। दोनो ही देश बीजिंग को सेना के आधुनिकीकरण और अपनी सीमाओं के आसपास ही उसकी गतिविधियों को लेकर बहुत चितिंत हैं, लेकिन दोनो की प्रतिक्रियाओं मे बहुत अतंर है। दोनो ही चीन से व्यापार करते रहना चाहते हैं। लेकिन भारत किसी एक पक्ष मे प्रकट रूप से सामने आने में आनाकानी कर रहा है और एक कारण यह भी है कि चीन के साथ भारत की सीमाऍ जुड़ी हुयी हैं। और अपनी इसी दुविधा के कारण ही भारत खुलकर सामने नहीं आ रहा है। जहाँ एक और जापान ने अपने अधिकारिक दस्तावेज मे चीन की सेना को एक खतरे के रूप में दर्शाना शुरू कर दिया है जैसाकि सन् 2010 के रक्षा सबधी दिशा निर्दिशों मे दर्शाया गया है जिसका बीजिंग ने तुरन्त ही तीखी प्रतिक्रिया द्वारा प्रतिकार भी किया था, वही दूसरी ओर भारत सरकार यह सफाई देने मे लगी रहती हैं कि जापान के साथ भारत का सुरक्षा समझौता किसी तीसरे देश की कीमत पर नहीं होगा विशेष रूप से चीन के लिए कतई नहीं होगा।

जबकि विश्व में चीन एक महाशक्ति के रूप में उभर रहा है चीन अपनी इसी क्षमता का अदांजा लगाकर हर क्षेत्र अर्थव्यवस्था, सैन्य शक्ति तथा अन्तर्राष्ट्रीय कूटनीति मे दखल बढा रहा है। लेकिन उसका उभार वास्तव मे शातिपूर्ण है इस पर प्रश्नचिन्ह लगता है। भारत, जापान भूटान, फिलीपींस और अन्य पड़ौसियों से उसे विवाद न केवल गहरा जाते हैं अपितु वह उन्हें सैन्य दबाव तथा युद्ध की धमकी तक ले जाता हैं। चीन विवाद की स्थिति में यथास्थिति का सम्मान नहीं करता है। डोकलाम सीमाई क्षेत्र में चीन द्वारा यथास्थिति में बदलाव के इरादे से की गई हरकत इसका प्रमाण है। वैसे भी उसकी छवि एक आक्रामक और विस्तारवादी देश की है दक्षिण चीन सागर के मसले पर वह अन्तर्राष्ट्रीय सबंधों तथा अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय की परवाह नहीं करता है।

जहॉ चीन और जापान के संबधो की बात है दोनों के बीच पुरानी प्रतिद्वन्द्विता है। सन् 1894–95 के मध्य दोनों के बीच पहला मनमुटाव हुआ जो युद्ध में बदल गया अगस्त 1894 ई. में एक चीनी जहाज जो चीनी सैनिको सहित कोरिया की ओर जा रहा था उसे आत्मसमर्पण न करने पर उसे जापान ने समुद्र में डूबो दिया। तत्पश्चात चीन ने 1 अगस्त 1894 को जापान के विरूद्ध युद्ध की घोषणा कर दी और इस प्रकार चीन जापान युद्ध आरम्भ हो गया। इस युद्ध मे सितम्बर के अतं तक ही चीनी सेना को कोरिया से भागना पड़ा और यालू नदी की मुठभेड़ मे चीनी बेड़े की बुरी हार हुयी। युद्धोपरान्त चीन ने जापान को फारमोसा, पेस्काडोर्स और लियाओंतुग प्रायद्वीप दे दिये तो चीन द्वारा जापान को 200,000,000 चीनी सिक्के हर्जाने के रूप मे देना स्वीकार किया गया। यह दो देशो के बीच पहली बड़ी दरार थी, जो आगे चलकर और चौड़ी हुयी।

चीन और जापान के मध्य दूसरा बड़ा विवाद जून 1931 मे सामने आया जब दक्षिणी मनचूरिया में एक जापानी सैनिक अधिकारी की हत्या कर दी गई। इसमें चीनी लोगों का हाथ होने की आशंका व्यक्त की गई। बात बढ़ती चली गई तथा 3 जनवरी 1932 तक सम्पूर्ण मन्चूरिया पर जापान का अधिकार हो गया। युद्ध बढ़ने की स्थिति में 1934 ई0 को जापान ने घोषणा कर दी कि अगर कोई देश चीन को युद्ध का सामान हवाई जहाज आदि देगा तो जापान इसे शत्रुता पूर्ण कारवाई मानेगा इन्ही के फलस्वरूप 1937 में चीन और जापान युद्ध औपचारिक रूप से शुरू हो गया। युद्ध आरम्भ होते ही 27 जुलाई को जापानी सेनाओं ने बीजिंग पर अधिकार कर लिया फिर चहर, सुई, यूनान शंघाई, नांकिग पर कब्जा कर लिया तथा 1938 ई0 मे हन्को, कन्टन पर अधिकार कर लिया। अतः साफ हैं चीन और जापान के सम्बधों में शत्रुता पुरानी हैं। जापान में सेनकाकू और चीन में दियाआयु आइलैण्ड के प्रचालित पूर्व चीन समुद्र में साफ है चीन और जापान के बीच शत्रुता बहुत पुरानी है।[13]

वर्तमान में भी चीन और जापान के संबंधों में विवाद बने हुए हैं। जापान में सेनकाकू और चीन में दियाआयु आइलैण्ड के प्रचलित पूर्वी चीन समुद्र में अधिकार के लिए चीन और जापान ने अपना–अपना दावा जताया है। इसके अलावा चीन द्वारा पूर्वी चीन समुद्र में 2 साल पहले शुरू किये गये समुद्री प्लेट कार्य निर्माण पर भी विवाद है। साथ ही चीन पूरे दक्षिणी चीन सागर पर भी दावा करता हैं। जबकि फिलिपिन्स, मलेशिया, वियतनाम, ताईवान भी इस इलाके पर अपना दावा करते हैं। स्पष्ट है दोनो देशों के बीच चोली दामन जैसा साथ बना हुआ है।

हॉलाकि दोनो देशों के बीच बेहतरीन आर्थिक सम्बध है और इसी वजह से सैन्य टकराव की आंशका धूमिल पड़ जाती है दिलचस्प बात यह भी है कि भारत से आर्थिक सम्बधों को लेकर भी दोनों देशों के बीच खासी प्रतिद्वन्द्विता दिखती है जापान से जहॉ भारत की रणनीतिक करीबी है, वहीं चीन बुलेट ट्रेन जैसे प्रोजेक्ट कम कॉस्टिंग पर लाने के कारण आश्वस्त रहता है।

ऐसी स्थिति में कहा जा सकता है कि चीन और जापान दोनो देश तमाम प्रतिद्वदिता के बावजूद अपने मजबूत आर्थिक सम्बधों के कारण किसी युद्ध जैसी स्थिति से बचते रहे हैं।

हॉलांकि चीन की विस्तारवादी नीतियों से तमाम दूसरे देशों की तरह जापान भी परेशान है इस बात में दो राय नहीं, खासकर दक्षिणी चीन सागर में जिस तरह अनतर्राष्ट्रीय समुदाय को चीन धत्ता बता रहा है उससे उसकी दूरगामी मंशा पर भारी संदेह होता ही हैं। इस वजह से भारत, जापान और चीन के बीच ऐतिहासिक शत्रुता व विवाद को चीनी कार्ड के रूप में तो इस्तेमाल नहीं करता है परन्तु इसको भारत व जापान के संबधों में रूझान व अवसर के रूप में जरूर देखता है।

निष्कर्ष

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि भारत और जापान का बढ़ता हुआ गठजोड़ चीन को प्रतिसंतुलित करने के सन्दर्भ में है लेकिन साथ में एक दूसरे के यहॉ मौजूद आर्थिक अवसरों को भुनाना भी है। हालांकि फिर भी यह नहीं कहा जा सकता कि भारत और जापान दोनों चीनी कार्ड खेल रहे हैं। दोनों के संबध मजबूत हो रहे है लेकिन ये चीनी फैक्टर से स्वतंत्र विकसित हो रहे हैं। अभी एक जापानी सर्वे आया है जिसमें भारत को दीर्घकालिक जापानी निवेश के लिहाज से भारत को सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान बताया गया है। भारत को व्यापार करने के हिसाब से 70 प्रतिशत जापानी विनिर्माताओं द्वारा मुख्य आकर्षक देश के रूप में समझा गया है, जबकि 67 प्रतिशत जापानियों ने चीन को 37 प्रतिशत ने रूस को तथा 28 प्रतिशत ने वियतनाम को पसंद किया है। हाल ही में जापानी विदेश मंत्रालय ने एक सर्वे कराया जो जापान की भारत में इमेज पर था। इसके परिणाम बड़े रूचिकर थे। 76 प्रतिशत ने भारत–जापान संबंधों को अच्छा तथा मित्रतापूर्ण बताया तथा जापान को भारत का भरोसेमंद साथी बताया। इस प्रकार भारत तथा जापान संबधों का अपना आधार है।

फिर भी यह सर्वमान्य है कि चीन राजनैतिक एवम् सामरिक रूप से महाशक्ति बनने जा रहा है जापान और भारत के चीन के साथ समान सामरिक हित जुड़े हुये हैं। अमेरिकी दृष्टिकोण से ग्रीन के अनुसार इस समय यह आवश्यक है कि जापान भारत सम्बन्ध चीन के खतरे पर आधारित न हो और ऐसा न लगे कि यह चीन के कारण है। ऐसा करना न भारत न जापान न अमेरिका के हित में है और प्रायः अतीत मे भारत जापान सम्बधों को गति देने के प्रयास उन्होने ही किये हैं जो इसे चीन के परिपेक्ष्य में देखते हैं। जापान और भारत दोनो ही चीन को पूर्वी एशिया मे नेतृत्व करने वाली शक्ति नहीं बनने देंगे और चीन दोनों राष्ट्रों के सम्बन्धों को प्रभावित करता रहेगा।

सन्दर्भ

1. धर्मदासानी एम.डी. : इण्डो–जापान रिलेशंस चैलेन्जेज एण्ड ओपोरच्यूनिटीज कनिष्क पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, न्यूदेहली, 2004 पृ.–11
2. सिविल सर्विसेज टाइम्स : भारत में उगता जापानी सूर्य अक्टूबर –2007 पृ.–4
3. सिविल सर्विसेज टाइम्स : भारत में उगता जापानी सूर्य अक्टूबर 2007, पृ.–6
4. यादव आर,एस. : भारत की विदेश नीति; एक विश्लेषण किताब महल, इलाहाबाद, 2004 पृ.–358
5. देखिए विकीपीडिया, दी फ्री इनसाइक्लोपीडिया इण्डिया–जापान रिलेशन्स
6. विक्टोरिया टूके : विदेश नीति और सुरक्षा राजनीति। परसेप्सन गैप इन जापान इण्डिया रिलेशंस 2013
7. देखिए डब्लू. डब्लू.डब्लू डाट एन्जल फायर डाट काम गुडंग जापानी ज इम्पायर एल्टजप जीओ. एच.टी.एम.
8. यादव आर.एस. : भारत की विदेश नीति; एक विश्लेषण किताब महल, इलाहाबाद, 2004 पृ.–361
9. केशवन के.वी., वर्मा लालिमा : जापान साउथ एशिया; सिक्यूरिटी एण्ड इकोनोमिक परस्पैक्टिव लांसर बुक्स, न्यूदेहली, 2000 पृ.–59
10. जोशी सजना इण्डिया–जापान रिलेशंस : इट्स इकोनोमिक आल दी वे इंस्टीट्यूट आफ फॉरेन पोलिसी स्टडीज, फरवरी 2011
11. प्रभाकर एच.एस.इण्डिया–जापान रिलेशंस : रिसेन्ट फेज वर्ल्डफोकस नव.दिस, 2009 पृ.–31
12. जी.वी.सी;नाइड, : इण्डिया–जापान स्ट्रेटोजिक कोरपरेसन : दी मेरीटाइम डाइमेन्सन, वर्ल्डफोकस, जन. 2009, पृ.–39
13. मानसिंह एल,इण्डिया–जापान रिलेशंस आईपीसी एस डीफन 34,इस्टीट्यूट आफ पीस एण्ड कानफिलक्ट स्टडीज,न्यूदेहली इण्डिया जन. 2007
14. प्रभाकर एच.एस. : रोल आफ अरे.डी.ए. इन इण्डिया–जापान रिलेशंस जर्नल ऑफ इण्डियन ओशीयन स्टडीज वाल्यूम 13, अंक 3, पृ.–418